❋ 3 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] अगर किसी में कुछ छिपाने की वा चोरी करने की आदत है तो भी बहुत बड़ी अवज्ञा हो जाती है। कहा जाता है– कख का चोर सो लख का चोर। लोभ के वश भूख लगी तो छिपाकर बिना पूछे खा लेना, चोरी कर लेना– यह बहुत खराब आदत है। इस आदत से बचने के ब्रह्मा बाप समान ट्रस्टी बनो। जो भी ऐसी आदतें हैं, वह सच-सच सुना दो।

2] यह भी तुम जानते हो– ऊंच ते ऊंच भगवान् है। वह बाप, टीचर, ज्ञान का सागर भी है। बाप आये हैं हम आत्माओं को साथ ले जाने लिए। सतयुग में बहुत थोड़े देवी-देवता रहते हैं। यह बातें तुम्हारे सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं होगी। तुम्हारी बुद्धि में है कि विनाश के बाद हम ही थोड़े होंगे। और इतने सब धर्म, खण्ड आदि नहीं होंगे। हम ही विश्व के मालिक होंगे। हमारा ही एक राज्य होगा। बहुत सुख का राज्य होगा।

3] किसको भूख लगती है तो लालच के कारण खा लेते हैं। लोभ वाला जरूर कुछ चोरी कर खाता होगा। **यह तो शिवबाबा का भण्डारा है, इसमें तो पाई की भी चोरी नहीं करनी चाहिए।** ब्रह्मा तो ट्रस्टी है। बेहद का बाप भगवान तुम्हारे पास आया है। भगवान् के घर में कभी कोई चोरी करता होगा? स्वप्न में भी नहीं।

❋ योग-

1] एक तो कहते हैं अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो तो मीठे बच्चों तुम्हारे सब पाप कट जायेंगे। और चक्र फिराओ, औरों को सर्विस कर आपसमान बनाओ।

2] बाप को याद करना है। इनसे ही बेड़ा पार होता है। याद करते-करते पुरानी दुनिया से नई दुनिया में चले जायेंगे। अभी बाकी थोड़ा समय है। फिर हम अपने सुखधाम में चले जायेंगे।

❋ धारणा-

1] बाप बच्चों को बैठ सिखलाते हैं– बुद्धि में क्या-क्या रहना चाहिए ! यहाँ तुम संगमयुग पर बैठे हो तो खान-पान भी शुद्ध पवित्र जरूर चाहिए।

2] घड़ी-घड़ी बाप समझाते हैं– मीठे-मीठे बच्चे, अपने को आत्मा समझो, देह-अभिमान छोड़ो। आत्मा कितना समय समझते हैं? यह पक्का करना है– हम आत्मा हैं।

3] तुम्हारे में भी कोई-कोई सेन्सीबुल हैं, जिनकी बुद्धि में बैठता है। इस जन्म में तो ऐसा कोई काम नहीं करना है। चोरी की देह-अभिमान आया तो रिजल्ट क्या होगी? पद भ्रष्ट हो जायेगा। कुछ न कुछ उठा लेते हैं। **कहते हैं कख का चोर सो लख का चोर।** यज्ञ में तो ऐसा काम कभी नहीं करना है। आदत पड जाती है तो फिर कभी छूटती नहीं है। कितना माथा मारते हैं।

❋ सेवा-

1] सबसे मूल सेवा है बाप की याद में रहना और दूसरों को याद दिलना, तुम किसी को भी बाप का परिचय दे उनका कल्याण कर सकते हो।

2] हर एक बच्चे को **बाप का परिचय** देते हैं, **औरों को समझाते हैं** कि बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप मिट जायें।

3] बच्चों को यह भी समझना कि हम अब पढ़ रहे हैं। फिर स्वर्ग में आकर जीवनमुक्ति का राज्य-भाग्य लेंगे।

4] मुख्य रूहानी सेवा है– सबको बाप का परिचय देना, यह है सबसे सहज बात।

5] तो अन्दर में बहुत खुशी होनी चाहिए। स्वर्ग में हम कौन-सा पद पायेंगे? हम क्या सेवा करते हैं? घर में नौकर चाकर हैं, उनको भी पहचान देनी चाहिए। जो खुद कनेक्शन में आते हैं, उनको शिक्षा देनी चाहिए। सबकी सेवा करनी है ना– अबलाओं की, गरीबों की, भीलनियों की।

6] जो अच्छी सर्विस करते हैं, उनको बड़ी प्राइज़ मिलती है। ऊंच ते ऊंच सेवा है– **बाप का परिचय देना,** यह तो कोई भी कर सकते हैं। बच्चों को यह (देवता) बनना है तो सेवा भी करनी चाहिए ना !

7] किसी प्यासे की प्यास बुझाना यह महान पुण्य है। जैसे पानी न मिले तो प्यास से तड़फते हैं ऐसे ज्ञान अमृत न मिलने से आत्मायें दु:ख अशान्ति में तड़फ रही हैं तो उनको ज्ञान अमृत देकर प्यास बुझाने वाले बनो। जैसे भोजन खाने के लिए फुर्सत निकालते हो क्योंकि आवश्यक है, ऐसे यह पुण्य का कार्य करना भी आवश्यक है इसलिए याह चांस लेना है, समय निकालना है- तब कहेंगे महान पुण्य आत्मा